International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिंदी पत्रकारिता में प्रभाष जोशी का प्रदेय

डॉ.पुष्पा शाक्य[1], संजय कुमार प्रजापति[2]

[1]शोध निर्देशिका, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, म.ल.बा.शा.कन्या स्नातकोत्तर महा., किला भवन अध्यक्ष अध्ययन मंडल हिन्दी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इन्दौर (म.प्र.)

[2]शोधार्थी, सहा.प्राध्यापक,हिंदी, शोध केंद्र-श्री मध्य भारत, हिंदी साहित्य समिति, इन्दौर, (म.प्र.)

शोध सारांश:
स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता लोकतंत्र की रीढ़ होती है, क्योंकि इसके माध्यम से ही आमजन समाज में घटित हो रही घटनाओं की सटीक जानकारी प्राप्त कर पाते हैं, जिससे वे विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। पत्रकार का काम केवल समाचार देना और छापना नहीं है, बल्कि जनहित से जुड़े मुद्दों को उजागर करना, सत्ता और संस्थानों की जवाबदेही सुनिश्चित करना और समाज में व्याप्त असमानताओं और अन्याय को सामने लाना भी है। प्रभाष जोशी जी ने एक पत्रकार और संपादक के रूप में अपनी धारधार लेखनी से समाज में मौजूद विसंगतियों के विरुद्ध हस्तक्षेप किया। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता में नैतिकता और गुणवत्ता के मानदंडों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपनी पत्रकारिता के जरिए यह दिखाया कि किस तरह निष्पक्ष और सत्यनिष्ठ पत्रकारिता समाज और लोकतंत्र को सशक्त कर सकती है। अपने लेखन और संपादन में हमेशा जनता की भलाई और सच्चाई की जीत को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसी कारण वे हिंदी पत्रकारिता के एक स्तंभ के रूप में माने जाते है। उनकी विचारधारा और कार्यप्रणाली ने पत्रकारों को प्रेरित किया कि वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें और लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की मजबूती बनाए रखें। प्रभाष जी ने समाज,राजनीति,साहित्य,संगीत,फिल्म और खेल विशेषकर क्रिकेट आदि विषयों को अपनी हिंदी पत्रकारिता में स्थान दिया।

बीजशब्द: हिंदी पत्रकारिता, समाज, नैतिकता, गुणवत्ता, मानदंड, सत्ता, मुद्दों, निष्पक्ष,सत्यनिष्ठ, असमानता,अन्याय, संपादन,राजनीति,साहित्य, संगीत,फिल्म,खेल(क्रिकेट) भाषा, मानवीय संवेदना और लोकहित। -

मूल आलेख-
एक स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता से लोकतंत्र मजबूत होता है क्योंकि इसी के माध्यम से ही लोगों को सूचना, ज्ञान और विवेक पूर्ण निर्णय लेने की शक्ति मिलती है इसीलिए पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। ऐसे ही नैतिकता और गुणवत्ता के मापदंड को स्थापित करने में प्रभाष जोशी जी का हिंदी पत्रकारिता में महत्वपूर्ण प्रदेय रहा। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता करते हुए कभी भी सत्ता वर्ग को हावी नहीं होने दिया। प्रभाष जोशी जी हिंदी पत्रकारिता के उन शिखर पुरुषों में से एक थे जिनकी लेखनी में सच कहने का अद्वितीय साहस था। उनका लेखन न केवल गहरी अंतर्दृष्टि का परिचायक था बल्कि उसमें समाज और देश के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता भी झलकती थी। प्रभाष जोशी जी ने अपनी कलम के माध्यम से विभिन्न विषयों पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य, राजनीति,

समाज, खेल और सांस्कृतिक मुद्दों पर निर्भीकता से अपने विचार रखे। वे गलत को गलत और सही को सही कहने में कभी पीछे नहीं हटते थे, चाहे वह किसी भी वर्ग, समुदाय या व्यक्ति से संबंधित हो। प्रभाष जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में निष्पक्षता और साहस का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जो आज के पत्रकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रभाष जोशी जी ने हिंदी पत्रकारिता को केवल एक पेशे के रूप में नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन के एक माध्यम के रूप में अपनाया। उनका उद्देश्य समाज सेवा था, पत्रकारिता उनका कर्म नहीं बल्कि साधन था। वे अक्सर कबीर के दोहे "आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास" का उल्लेख करते थे, जिसका अर्थ है कि वे समाज सेवा करने आए थे, परन्तु उन्हें करनी पड़ी पत्रकारिता। सन 1960 में इंदौर के नई दुनिया अखबार से अपनी पत्रकारिता यात्रा की शुरुआत करते हुए, उन्होंने अपने लेखन से समाज के हित और जागरूकता को सर्वोपरि रखा। उनकी लेखनी ने हिंदी पत्रकारिता में कई मानदंड स्थापित किए और वे एक विशिष्ट पहचान के रूप में उभरकर सामने आए। प्रभाष जोशी जी का जीवन समाज सेवा और समाज परिवर्तन के प्रति समर्पण का एक आदर्श उदाहरण था। वे हिंदी पत्रकारिता में इसलिए नहीं आए थे कि उन्हें एक पेशे के रूप में इसे अपनाना था, बल्कि उनका उद्देश्य समाज के हित में सच्चाई और न्याय की आवाज को बुलंद करना था। 'नईदुनिया' उनके पत्रकार जीवन का पहला बड़ा पड़ाव बना। इससे पहले, वे देवास जिले के सुनवानी महाकाल गांव में शिक्षक थे, लेकिन शिक्षा विभाग के एक अधिकारी के साथ वैचारिक मतभेद के कारण उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी। इस नौकरी को छोड़ने के बाद, उनके जीवन की असली पत्रकारिता यात्रा आरंभ हुई। अपनी आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए उन्होंने इंदौर में एक बढ़ई के यहां जाकर रंदा चलाने का कार्य भी किया, ताकि परिवार को आर्थिक सहायता मिल सके। उनकी माँ, लीलाबाई जोशी, ने भी उनके संघर्ष और कठिनाई भरे दिनों को करीब से देखा। प्रभाष जोशी जी का यह संघर्ष और उनका समर्पण समाज और पत्रकारिता के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को एक साधन के रूप में समाज परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनकी कलम हमेशा सच्चाई के पक्ष में खड़ी रही, और उन्होंने हर उस मुद्दे पर लिखा जो समाज की भलाई के लिए आवश्यक था। उन्होंने हिंदी समाचार पत्र 'नई दुनिया' में कार्य करते हुए संपादक राजेन्द्र माथुर, शरद जोशी, और राहुल बारपुते जैसे वरिष्ठ पत्रकारों के साथ काम करने का अवसर पाया। विशेष रूप से, उनके पहले वैचारिक गुरु, राहुल बारपुते, जिन्हें 'बाबा' के नाम से जाना जाता था, ने उन्हें विनोबा भावे की नगर-यात्रा पर रिपोर्ट तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी।

इस यात्रा के दौरान प्रभाष जोशी जी ने पत्रकारिता में अपना करियर बनाने का निर्णय लिया। 'नईदुनिया' ने उन्हें हर प्रकार का अवसर प्रदान किया—प्रूफ रीडिंग, संपादकीय लेखन, साहित्यिक लेखन, और रिपोर्टिंग में। इसके बाद, 1966 में उन्होंने भोपाल से शरद जोशी के साथ दैनिक 'मध्यदेश' अखबार शुरू किया, जो आर्थिक कठिनाइयों के कारण बंद हो गया। सन 1968 में दिल्ली पहुँचकर उन्होंने 'राष्ट्रीय गांधी समिति' में प्रकाशन का कार्य संभाला और 1970-1974 के बीच 'सर्वोदय' निकाला। साथ ही, चम्बल के डाकुओं के आत्मसमर्पण में जयप्रकाश नारायण के साथ जुड़े, और इस पर 'चम्बल की बन्दूके गांधी के चरणों में' शीर्षक से एक पुस्तक भी लिखी। लेकिन उन्हें व्यापक पहचान 17 नवंबर 1983 को 'जनसत्ता' हिंदी दैनिक के संपादन से मिली। जनसत्ता अखबार की साख और लोकप्रियता का एक मुख्य कारण यह था कि उसने सदैव विपक्ष की भूमिका निभाई, किसी के पक्ष में झुकाव नहीं दिखाया। जनसत्ता ने न केवल भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त रुख अपनाया बल्कि स्वतंत्र पत्रकारिता की मिसाल भी पेश की। प्रभाष जोशी जी के नेतृत्व में 'जनसत्ता' अखबार ने निडरता और निष्पक्षता का परिचय दिया, जिससे हिंदी पत्रकारिता को एक नया आयाम और पाठकों का विश्वास प्राप्त हुआ। 'जनसता' हिंदी दैनिक अखबार ने हमेशा एक सामाजिक जिम्मेद्दारी निभाई। इस पर संत समीर जी लिखते है कि-''जनसत्ता ने हमेशा एक सामाजिक जिम्मेदारी निभाई। इंदिराजी की हत्या हुई, हत्या के बाद जो देश भर में दंगे हुए, उन दंगों में दिल्ली में 4 हजार लोग मार दिए। पढ़े-लिखे लोग भी इसे ठीक कह रहे थे। एकमात्र जनसत्ता अखबार था, जिसने सिखों के पक्ष में आवाज उठाई। जो सच है, सामने लाया। इसीलिए आज भी सिखों के मन में जनसत्ता के लिए रिसपेक्ट बना हुआ है। उस समय कई बार ऐसा हुआ कि हिंदू दंगाइयों ने हमारे

रिपोर्टरों को मार-पीटकर भगा दिया। गाड़ियाँ जला दीं हमारी। संवाददाता किसी तरह से जान बचाकर भागे, लेकिन हमने खबरें नहीं छोड़ीं। इसके कारण जनसत्ता की एक साख बन गई कि वह सत्य के पक्ष में है, अन्याय के विरोध में है। तो जो सामाजिक जिम्मेदारी जनसत्ता ने उस समय निभाई थी, उसी के कारण उसकी साख बनी।''1 प्रभाष जोशी जी एक ऐसे विलक्षण पत्रकार और संपादक थे, जिनकी पहचान समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता से होती है। वे हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में केवल एक संपादक नहीं, बल्कि एक समाजसेवी भी थे, जिन्होंने संपादकीय स्वतंत्रता का पूरी तरह से सदुपयोग करते हुए पत्रकारिता को समाज सेवा का माध्यम बना लिया। अपने संपादकीय में उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर निष्पक्षता और साहस के साथ अपनी कलम चलाई। प्रभाष जोशी जी ने बंद कमरे में बैठकर केवल लेखन नहीं किया, बल्कि एक कुशल नेतृत्व कार्यकर्ता की तरह गाँवों, शहरों और जंगलों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने समाज की जमीनी हकीकत को समझने के लिए लोगों से संवाद किया, उनकी समस्याओं और विषमताओं का गहराई से अध्ययन किया। उनकी संवेदनशीलता और व्यापक दृष्टिकोण ने सूचनाओं को संवाद का रूप दिया, जो पाठकों के दिलों तक पहुँचा। उनकी पत्रकारिता में समाज के प्रति गहरी समझ, लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता, और एक सच्चे जनसेवक का मर्म झलकता था, जिसने हिंदी पत्रकारिता को नई ऊँचाई प्रदान की। '' सांप्रदायिकता का विरोध करते हुए प्रभाष जी ने उस लोक तत्व से ही अपनी शक्ति ग्रहण की जो हमारे समाज को हजारों वर्षों से कितने ही स्तरों पर चलाता रहा है और जिसका अटल विश्वास यह है कि मनुष्य की धर्म चेतना एक आंतरिक मानवीय स्पंदन है, कोई लाठी-डंडा या त्रिशूल नहीं है जिसे दिखाकर दूसरे धर्मों पर अपना वर्चस्व स्थापित किया जाए। प्रभाष जोशी हिंदी पत्रकारिता में इसके लिए हमेशा याद किए जाएंगे। इसी तरह जून 1995 में इमरजेंसी का एक दशक पूरा होने पर उस कुख्यात दौर की याद करने वाले वे हिंदी के इक्का-दुक्का संपादकों में से थे। दरअसल, बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद प्रभाष जोशी जी कि पत्रकारिता में जो मोड़ आया उसने उन्हें एक ऐसी भूमिका में ला दिया जो अविस्मरणीय कही जाएगी। इससे पहले के दौर के उनके लेखन में निर्भयता और राजनीतिक बेबाकी थी, जिसने इस हादसे के बाद सामाजिक प्रतिबद्धता की शक्ल ली। उन्होंने सामाजिक ताना-बाना तोड़ने में लगी हुई हिंदुत्ववादी शक्तियों के खिलाफ जैसे एक मोर्चा सा खोल दिया और जब वे औपचारिक स्तर पर जनसत्ता से अलग हुए तब भी कागद कारे जैसे स्तंभ के जरिये निरंतर सांप्रदायिकता और बाजारवाद से लोहा लेते रहे।''2

क्रिकेट खेल कि बारीकियों पर बेबाक रूप से लिखने वाले ''सन् १९६० के आस-पास हिंदी खेल पत्रकारिता जगत् को एक दुधारी तलवार मिली एक ऐसा पढ़ा-लिखा तेज-तर्रार पत्रकार, जिसे भारत-चीन द्वंद्व के बारे में भी जानकारी थी, प्रथम और द्वितीय विश्व के बीच में लटकते तृतीय विश्व की आर्थिक राजनीतिक जटिलताओं का बोध था और साथ ही गहरी जानकारी थी 'लेट कट' और 'ग्लांस' की। 'नई दुनिया' अखबार को प्रभाष जोशी जी मिले और हिंदी भाषी खेल-प्रेमियों के लिए पठनीय सामग्री का भंडार। प्रभाष जी ने २३ वर्ष की अवस्था में जिस महाकाव्य की रचना शुरू की थी, आज हिंदी खेल पत्रकारिता का वह महाकाव्य कई पर्वों को पार कर विशाल स्वरूप ले चुका है। भले ही इस यात्रा में उनकी भूमिका एकल और स्वतंत्र रही हो''3 प्रभाष जोशी जी ने हिंदी खेल पत्रकारिता में जो छाप छोड़ी, वह केवल शब्दों की बुनाई नहीं थी, बल्कि क्रिकेट के खेल को भावनाओं और संवेदनाओं के धागों में पिरोने की कला थी। उन्होंने क्रिकेट को केवल आंकड़ों और तथ्यों से ऊपर उठाकर एक अनुभव, एक एहसास बनाया। उनके लेखन में ऐसी जीवंतता थी कि पाठक न केवल शब्दों को पढ़ता बल्कि हर शब्द के माध्यम से गेंद को हवा में घूमते, बल्ले से टकराते और मैदान पर दौड़ते हुए महसूस करता था।

उनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वे मैदान में जाकर वास्तविक खेल को आंखों से देखते और फिर उसे इस अंदाज़ में लिखते कि हर पाठक उस दृश्य का हिस्सा बन जाता। अंग्रेजी से अनूदित खेल समाचारों के दौर में प्रभाष जी ने एक

अलग राह बनाई। उन्होंने खेल की हर बारीकी को हिंदी में इस कदर सरलता और गहराई से उतारा कि यह भाषा केवल खेल की व्याख्या नहीं बल्कि उसके भावों को भी पाठक के दिल में उतार दे।

प्रभाष जोशी जी ने क्रिकेट के हर शॉट, हर विकेट, हर ओवर को अपनी लेखनी के माध्यम से अमर बना दिया। वे केवल क्रिकेट रिपोर्टर नहीं थे, वे खेल के सच्चे प्रेमी थे जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को एक नई ऊंचाई दी। उनकी लेखनी ने साबित किया कि हिंदी न केवल भावनाओं की भाषा है, बल्कि बारीकियों और विश्लेषण की भी पूरी क्षमता रखती है। "प्रभाष जोशी जी ने हिंदी पत्रकारिता को एक नया मुहावरा दिया, उन्होंने वाचिक परंपरा को लिखे हुए शब्द की परंपरा से जोड़ा और तथाकथित देश के राष्ट्रीय स्तर के अखबारों को अगर छोड़ भी दिया जाए तो दर्जनों क्षेत्रीय अखबारों ने आषा के इस मुहावरे को अपनी शक्ति बनाया और वह इसमें पूरी तरह से सफल भी हुए।"4 प्रभाष जी के संपादकीय शिल्प के बारे में डॉ. नामवर सिंह जी ने लिखा है कि-'प्रभाष जी की सर्जनात्मकता का अमोघ अस्त्र हैं उनकी भाषा! ठेठ हिन्दी का ठाठ क्या है, इसका अहसास प्रभाष जी के गद्य को पढ़ने पर ही होता है। इस गद्य की उर्वर भूमि है मालवा की लोक बोली। इस धारणा की पुष्टि के लिए 'कागद कारे में प्रयुक्त अपनी बोली के शब्दों की सूची बनाकर ही की जा सकती है, जो फिलहाल संभव नहीं है। प्रभाष जी की सर्जनात्मक प्रतिभा का सबसे बड़ा प्रमाण है कॉलम का शीर्षक। पिटी पिटाई नीक से हटकर वे ऐसा शीर्षक लगाते हैं कि एक तो पाठक को तुरंत अपनी ओर खींचता है और फिर पूरे कॉलम के मूल स्वर का भी आभार दे देता है।''5

प्रभाष जोशी जी ने जनसत्ता अखबार में जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया, वह पत्रकारिता के माध्यम से आम जन से सीधा संवाद स्थापित करने वाली थी। उनकी शैली में देशज शब्दों का सुंदर प्रयोग, बिना किसी बनावट या अतिरिक्त आडंबर के, सजीवता के साथ पाठकों तक पहुँचती थी। प्रभाष जोशी जी ने हिंदी पत्रकारिता को उन सीमाओं से बाहर निकाला जो साहित्यिक हिंदी की पारंपरिकता से बंधी हुई थी। उनका मानना था कि भाषा का उद्देश्य संप्रेषण होना चाहिए, न कि किसी विशेष वर्ग के लिए कठिन और सुसंस्कृत दिखना। उन्होंने अपनी लेखनी में क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों का समावेश कर पत्रकारिता को आम लोगों के करीब लाया और हिंदी में पत्रकारिता को नई दिशा दी, जो सरल, सजीव और प्रभावशाली थी। उनकी इस शैली ने पत्रकारिता में भाषा के महत्व और उसकी भूमिका को नए आयाम दिए।

निष्कर्ष

प्रभाष जोशी जी भारतीय हिंदी पत्रकारिता के ऐसे स्तंभ थे। जिन्होंने हिंदी पत्रकारिता को लोकतांत्रिक और जनपक्षीय स्वरूप दिया। उनके लेखन और संपादकीय कौशल में न केवल पत्रकारिता की परिभाषा को नया आयाम मिला, बल्कि पत्रकारिता के नए तेवर, अंदाज़ और भाषा शैली को भी एक अद्वितीय पहचान दी। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को उस ऊंचाई तक पहुँचाया जहाँ यह आम आदमी की आवाज़ बन गई। उनके विचार में पत्रकारिता महज विश्लेषण या आलोचना का माध्यम नहीं थी, बल्कि समाज की विसंगतियों के खिलाफ एक सक्रिय हस्तक्षेप थी। प्रभाष जोशी का मानना था कि पत्रकारिता का उद्देश्य सत्ता के प्रभाव में नहीं बल्कि जनभावनाओं की अभिव्यक्ति में निहित होना चाहिए। उन्होंने हमेशा सरल और सजीव भाषा में लिखा, जिससे उनके लेखन में आम आदमी की बोली और भावनाएं प्रतिबिंबित होती थीं। उन्होंने कठिन और जटिल शब्दावली को हटाकर आसान और सुबोध भाषा को अपनाया, ताकि हर पाठक उनके लेखन से खुद को जोड़ सके। खेल पत्रकारिता में भी प्रभाष जोशी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। विशेषकर क्रिकेट पर उनके लेखों ने खेल को सिर्फ प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया। क्रिकेट पर उनकी गहरी पकड़ ने इसे भारतीय जनमानस में एक अलग महत्व दिया। इसके अलावा, उन्होंने टेनिस जैसे खेलों पर भी गहन लेखन किया और खेल पत्रकारिता को एक नया आयाम प्रदान किया। संगीत और कला के प्रति उनका अनुराग उनकी बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता था। उनकी समझ में शास्त्रीय संगीत और

कला केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं थे, बल्कि यह आम लोगों की संवेदनाओं का भी हिस्सा थे। उनकी लेखनी में कला और संगीत के प्रति गहरी संवेदनशीलता और ज्ञान स्पष्ट रूप से झलकता था। प्रभाष जोशी जी के लिए पत्रकारिता एक मिशन थी, जिसका उद्देश्य समाज में जागरूकता फैलाना और सामाजिक न्याय के पक्ष में खड़ा होना था। उनकी निर्भीकता और निष्पक्षता ने हिंदी पत्रकारिता को एक नई दिशा दी, जो आज भी प्रेरणास्रोत बनी हुई है। उनकी सोच, सिद्धांत और लेखन ने पत्रकारिता को सिर्फ सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में बदलाव का एक सशक्त साधन बना दिया।

सन्दर्भ सूची

1. पत्रकारिता के युग निर्माता: प्रभाष जोशी, संत समीर पृष्ठ संख्या,57
2. यादों में प्रभाष, पृष्ठ संख्या,44
3. खेल पत्रकारिता,पदम पति शर्मा, पृष्ठ,29
4. प्रभाष जोशी ८० शब्द और उनके सम्मान में कुछ और शब्द पृष्ठ संख्या, 65
5. जब तोप मुक़ाबिल हो,प्रभाष जोशी, पृष्ठ-10